IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पैग़म्बरी धर्म में ईश्वर की आराधना और व्यावसायिक नैतिकता

अमित कुमार

दर्शनशास्त्र विभागए शोधार्थी, मगध विश्वविद्यालयए बोध गयाए बिहार

डॉ० श्वेता सिंह

सहायक प्राध्यापिका, दर्शनशास्त्र विभाग, ए. एम. कॉलेजए गया,मगध विश्वविद्यालयए बोध गयाए बिहार

अमूर्त

व्यवसाय में नैतिकता और बिजनेस स्कूलों में नैतिकता के शिक्षण और सीखने पर जोर बढ़ गया है। नैतिक समझ का एक प्रारंभिक स्रोत किसी की धार्मिक पृष्ठभूमि और मान्यताएँ हैं। इसलिएए एक अत्यंत प्रासंगिक प्रश्न यह हैरू व्यावसायिक गतिविधियों में नैतिक प्रथाओं के संबंध में विभिन्न धर्मों की शिक्षाएँ क्या हैंद्य उस व्यापक प्रश्न के भीतरए एक अधिक सीमित प्रश्न यह हैरू हम धर्मग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन से क्या सीख सकते हैं जो हमें व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षणए सीखने और अभ्यास को बेहतर बनाने में मदद करेगाद्य यह पेपर यहूदी धर्मए ईसाई धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों पर ध्यान केंद्रित करता है और निष्कर्ष निकालता है कि उन धर्मग्रंथों में व्यावसायिक नैतिकता में समकालीन विषयों के संबंध में बहुत कुछ समान और प्रासंगिक है। इन आधारों पर आधारित एक कक्षा चर्चा और संवाद व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षण और सीखने में लगे लोगों के लिए सहायक होगा।

कीवर्डरू ईसाई धर्मय इस्लामय यहूदी धर्मय तुलनात्मक अध्ययनय व्यावसायिक नैतिकता सिखाना

परिचय

व्यवसाय में नैतिकता को लेकर चिंता बढ़ गई है। इसके अनुरूपए बिजनेस स्कूलों में व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षण और सीखने पर जोर बढ़ गया है। बेग्स और डीन ;2007द्ध नैतिक शिक्षा पर इस जोर और पूर्व शोध के लिए कई संदर्भों के साथ एक अच्छी पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। यह जोर नवीनतम एएसीएसबी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मानकों ;एएसीएसबी 2008एए पृष्ठ 15द्ध में संहिताबद्ध हैए हालांकि नैतिकता या उचित शिक्षाशास्त्र के अर्थ के संबंध में मानक उल्लेखनीय रूप से अस्पष्ट हैं।

कई लोगों के लिएए सिद्धांत संबंधी नैतिक समझ का एक प्रारंभिक स्रोत उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि और मान्यताएं हैं ;एनआईयू 2006द्ध। हालाँकिए ।ब्ठ एथिक्स एजुकेशन रिसोर्स सेंटर ;।ब्ठ 2008इद्ध की पठन सूची में धर्म और नैतिकता की चर्चा कहीं नहीं है। न ही धार्मिक मान्यताओं को व्यावसायिक नैतिकता में विशिष्ट पाठ्यपुस्तकों के कवरेज में एकीकृत किया गया है ;उदाहरण के लिए फेरेल एट अल 2005द्ध। ये दुर्भाग्यपूर्ण निरीक्षण हैं जो संभावित रूप से छात्रों और संकाय द्वारा कक्षा में लाए गए पृष्ठभूमि और कक्षा में शामिल सामग्री के बीच एक शून्य छोड़ देते हैंए जब तक कि प्रशिक्षक जानबूझकर विशिष्ट शिक्षण सामग्री को पूरक नहीं करता है।

व्यावसायिक गतिविधियों में नैतिक आचरण के संबंध में विभिन्न धर्मों की क्या शिक्षाएँ हैंः व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षणए सीखने और अभ्यास में सुधार के लिए हम धर्मग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन से क्या सीख सकते हैंः ये प्रश्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षण और सीखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। आख़िरकारए यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है कि घर अधिकांश लोगों के लिए पहला स्कूल हैए और कई कॉलेज छात्र कॉलेज जाने के समय तक पहले से ही एक विशेष विश्वास या चर्च में मजबूती से जड़ें जमा चुके होते हैं। यह पेपर यहूदी धर्मए ईसाई धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों में पाई गई शिक्षाओं के प्रकाश में उपरोक्त प्रश्नों को संबोधित करता है . दुनिया के तीन सबसे बड़े धर्मए जिनके दुनिया भर में 14 मिलियनए 2ण्1 बिलियन और 1ण्5 बिलियन अनुयायी हैं ;।कीमतमदजेण्बवउ 2008द्ध ण विशेष रूप से हम रिश्वतखोरीए धोखाधड़ी और धोखाधड़ीए भेदभाव और कर्मचारी मुआवजे सहित व्यावसायिक नैतिकता पाठ्यपुस्तकों ;उदाहरण के लिए फेरेल एट अल 2005द्ध में संबोधित कुछ विषयों पर शास्त्रीय शिक्षाओं की जांच करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

हाल के वर्षों में धर्म और नैतिकता के बीच संबंध के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। पिछले लेखकों ने किसी विशेष धर्म के नैतिक परिप्रेक्ष्य पर चर्चा की है जैसे कि यहूदी धर्म ;ग्रीन 1997य पावा 1998य फ्रीडमैन 2000द्धए ईसाई धर्म ;स्टेपलफोर्ड 2000य ऑरविग 2002य बीड और बीड 2005य वैन डूजर एट अल 2007द्धए इस्लाम ;राइस 1999द्ध य अल. फ़ौज़ान 2003य वियर 2004द्ध। दूसरों ने एक ही धर्म के परिप्रेक्ष्य से एक ही नैतिक मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया है . जैसे आकार घटाने पर यहूदी दृष्टिकोण ;कार्वर 2004द्ध . या कई धर्म . जैसे कि यहूदी धर्मए ईसाई धर्म और इस्लाम ;लुईसन 1999द्ध से सूदखोरी पर दृष्टिकोण।

कुछ लोगों ने व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षण में इस रिश्ते की चर्चा को शामिल करने पर विचार किया है। एपस्टीन ;2002द्ध ने इस बात पर जोर दिया किरू

पाठ्यक्रम के प्रासंगिक हिस्सों में ख्आस्था, परंपराओं से ली गई नैतिक अंतर्दृष्टि का परिचय प्रबंधन शिक्षा के लिए बहुत कुछ प्रदान करता है यदि इसे बौद्धिक रोशनी के उद्देश्यों के लिए प्रस्तुत किया जाता है न कि उपदेश के लिए। ;पृण 94द्ध

कोयस ;2001द्ध ने मानव संसाधन प्रबंधन पर एक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक नैतिकता के धार्मिक सिद्धांतों की शुरूआत का वर्णन किया। पावा ;2007द्ध ने व्यावसायिक नैतिकता पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता सिखाने पर चर्चा की है। हालाँकिए इनमें से कोई भी लेखक कई धर्मों के विशिष्ट धार्मिक ग्रंथों के बारे में श्रेणीबद्ध सुझाव देने तक नहीं गया है जिनका उपयोग व्यावसायिक नैतिकता सिखाने में किया जा सकता है। यह पेपर उस शून्य को भरने की शुरुआत करने का एक प्रयास है।

व्यवसाय के प्रबंधनए कार्यस्थल की नैतिकता और धन के संचय और उपयोग पर आचार संहिता पर लगभग हर प्रमुख धर्म में व्यापक साहित्य है। उदाहरण के लिएए इस्लाम में इन संहिताओं और कानूनों का आधार कुरान हैए जिसका शिक्षाओं का उदाहरण पैगंबर मोहम्मद ;हदीसद्ध की बातों और जीवन में दिया गया है। ईसाई धर्म मेंए आधार बाइबिल है जैसा कि पुराने नियम और नए नियम में प्रस्तुत किया गया है। यहूदी धर्म के लिएए स्रोत टोरा या तनाख हैं ;जो ईसाइयों द्वारा इस्तेमाल किए गए पुराने नियम से काफी मेल खाते हैंद्ध। इस पेपर में हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि विभिन्न इब्राहीम धर्मों के ये धर्मग्रंथ व्यवसाय में पाए जाने वाले कुछ नैतिक मुद्दों के बारे में क्या कहते हैं। हिब्रू बाइबिल के सभी यहूदी उद्धरण यहूदी प्रकाशन सोसायटी संस्करणए 1917 ;जेपीएसद्ध के प्रकाशन से हैं। बाइबिल के ईसाई उद्धरण किंग जेम्स संस्करण ;केजेवीद्ध से हैं। कुरान के इस्लामी उद्धरण अब्दुल्ला यूसुफ अली की टिप्पणी से हैं।

व्यावसायिक नैतिकता और शास्त्रों में नैतिक मुद्दे

इक्कीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों के दौरान बिजनेस प्रेस में बहुत सारा लेखन व्यवसाय में संदिग्ध प्रथाओं के संदर्भ से भरा हुआ है। लेखकों ने आज कार्यस्थल में कई समस्याओं की पहचान करने और यह देखने का निर्णय लिया कि क्या उन्हें प्रमुख इब्राहीम धर्मों के धर्मग्रंथों की शिक्षाओं द्वारा संबोधित किया गया था। जिन समस्याओं या प्रथाओं को संबोधित किया गया है वे रिश्वतखोरीए धोखाधड़ी और धोखाधड़ीए भेदभाव और कर्मचारी मुआवजा हैं।

ण्ण रिश्वतखोरी

अधिकांश पश्चिमी समाजों में रिश्वतखोरी को आम तौर पर एक अनैतिक व्यवसायिक व्यवहार माना जाता है। कई लोगों के पास रिश्वतखोरी में लिप्त दोनों पक्षों को दंडित करने वाले स्पष्ट कानून हैं। रिश्वतखोरी क्या है और अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में इसे अनैतिक ;और यहां तक कि अवैधद्ध क्यों माना जाता हैः रिश्वत को ष्ब्लैक लॉ डिक्शनरी द्वारा सार्वजनिक या कानूनी कर्तव्य के निर्वहन में किसी अधिकारी या अन्य व्यक्ति के कार्यों को प्रभावित करने के लिए किसी भी मूल्य की वस्तु की पेशकशए देनाए प्राप्त करना या याचना करनाष के रूप में परिभाषित किया गया है ;विकिपीडियाए 2008द्ध। फेरेल एट अलण ;2005ए पृष्ठ 33द्ध मानता है कि रिश्वत रिश्वत प्राप्त करने वाले व्यक्ति के लिए हितों का टकराव पैदा करती है। हालाँकिए फेरेल एट अल। ;2005ए पृण 33ए 234.236द्ध बताते हैं कि रिश्वतखोरी दुनिया भर की कुछ संस्कृतियों में स्वीकार की जाती है और जो लोग रिश्वत नहीं देते हैं वे प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान में हो सकते हैं। वे आगे समरोर ;2000द्ध के एक अध्ययन का हवाला देते हुए कहते हैं कि ष्दुनिया भर में हर साल रिश्वत या किसी अन्य भुगतान के रूप में लगभग 80 बिलियन डॉलर का भुगतान किया जाता हैष। जब अब्राहमिक धार्मिक ग्रंथ रिश्वतखोरी को संबोधित करते हैं तो वे इसे एक ऐसी प्रथा के रूप में निंदा करते हैं जो अन्याय और भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

रिश्वतखोरी . यहूदी परिप्रेक्ष्य

यहूदी दृष्टिकोण के अनुसार रिश्वतखोरी पापियों से जुड़ी है। भजन 26रू9.10 कहता हैए श्श्मेरे प्राण को पापियों के साथ न मिलाओए और मेरे प्राण को खूनी मनुष्यों के साथ न मिलाओय उनके हाथ में चतुराई हैए और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा हुआ है।श निर्गमन 23रू8 पाठकों को रिश्वत न लेने की सलाह देता है जब यह कहता हैए श्और कोई उपहार न लेनाय क्योंकि दान देखने वालों को अन्धा कर देता हैए और धर्मियों की बातें पलट देता है। रिश्वतखोरी से प्रेरित समाज के परिणामों का वर्णन तब किया गया है जब यशायाह कहते हैंरू

वफ़ादार शहर कैसे वेश्या बन जाता है! वह जो न्याय से परिपूर्ण थीए धर्म उस में वास करता थाए परन्तु अब हत्यारे हो गए। तेरी चाँदी मैल हो गई हैए तेरा दाखमधु जल में मिल गया है। तेरे हाकिम विद्रोही और चोरों के साथी हैंय हर कोई रिश्वत से प्रीति रखता हैए और पुरस्कार के पीछे भागता हैय वे अनाथों का न्याय नहीं करतेए और न विधवा का मुक़द्दमा उन तक पहुँचते हैं। ;1रू21.23द्ध

रिश्वतखोरी की यहूदी निंदा का एक और उदाहरण तब मिलता है जब हमें बताया जाता है कि ष्ण्ण ख्सैमुअल के, बेटे उसके रास्ते पर नहीं चलेए बल्कि लालच में आकर रिश्वत लेने लगेए और न्याय को बिगाड़ दियाष ;1 सैमुअल 8रू3द्ध।

यहूदी धर्मग्रंथों के उद्धरणों के इस नमूने से यह स्पष्ट है कि यहूदी धर्म में रिश्वतखोरी को दृढ़ता से हतोत्साहित किया जाता है और इसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसे न्याय को विकृत करने के रूप में देखा जाता है।

रिश्वतखोरी . ईसाई परिप्रेक्ष्य

ईसाई परिप्रेक्ष्यए यहूदी पुराने नियम की नींव पर आधारित होने के कारणए उपरोक्त सभी उद्धरण शामिल हैं। इसके अलावाए ईसाई न्यू टेस्टामेंट से भी इसी तरह के कई उद्धरण मिलते हैं।

एक अनुच्छेद में साइमन जादूगर ने उस शक्ति को खरीदने की कोशिश की जो उसने प्रेरितों द्वारा हाथ रखने में महसूस की थीए और साइमन पीटर ने उसे प्रेरितों के काम 8रू17.22 में दंडित किया। अपराध का सार तब संबोधित किया गया जब ष्ण्णपतरस ने उससे कहाए तेरा धन तेरे साथ नष्ट हो जाएगाए क्योंकि तू ने सोचा हैए कि परमेश्वर का दान धन से मोल लिया जा सकता हैष ;अण 20द्ध।

एक अन्य अनुच्छेद मेंए यहूदिया के गवर्नर फेलिक्स ने टारसस के पॉल ;शाऊलद्ध को जेल में डाल दिया था और उसे एहसास हुआ कि वह किसी भी आरोप का दोषी नहीं थाए लेकिन वह चाहता था कि पॉल अपनी आजादी पाने के लिए उसे रिश्वत दे। इसका वर्णन अधिनियम 24रू24.26 में किया गया है। रिश्वत की इच्छा श्लोक 26 में निहित है जो कहती हैए ष्उसे यह भी आशा थी कि पॉल से उसे पैसे दिए जाएंगेए ताकि वह उसे खो देरू इसलिए उसने उसे बार. बार बुलायाए और उसके साथ बातचीत की।ष

पीटर और पॉल दोनों ने रिश्वतखोरी में भाग लेने के अनुरोध का सम्मान करने से इनकार कर दिया। पीटर ने रिश्वत लेने से इनकार कर दिया और पॉल ने रिश्वत देने से इनकार कर दिया। उपरोक्त छंदों से यह स्पष्ट है कि ईसाई परंपरा में रिश्वतखोरी को अत्यधिक अनैतिक माना जाता हैए यहां तक कि उन मामलों में भी जहां इसका उपयोग प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के लिए नहीं किया जाएगा।

रिश्वतखोरी . इस्लामी परिप्रेक्ष्य

इस्लामी परिप्रेक्ष्य के अनुसारए रिश्वतखोरी को भ्रष्टाचार का एक रूप माना जाता है और इसे दृढ़ता से हतोत्साहित किया जाता है। रिश्वत मांगने या स्वीकार करने का दायित्व केवल नौकरशाह पर नहीं हैए बल्कि उस व्यक्ति या व्यवसाय पर भी है जो रिश्वत की पेशकश करता है क्योंकि ष्अल्लाह के रसूल ;सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमद्ध ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले को श्राप दिया हैष ;अबू दाऊदए पुस्तक 24ए संख्या 3573द्ध।

कुरान निम्नलिखित आयत में अप्रत्यक्ष रूप से रिश्वतखोरी से संबंधित हैरू ष्और अपनी संपत्ति को न्यायाधीशों के लिए चारा के रूप में उपयोग न करेंए इस इरादे से कि आप गलत तरीके से और जानबूझकर ;अन्यद्ध लोगों की संपत्ति का थोड़ा सा हिस्सा खा सकते हैंष ;2रू188द्ध द्धण इस श्लोक की एक टिप्पणी के अनुसारए यह लालच का एक सूक्ष्म रूप है ष्जहां कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति का उपयोग दूसरों . न्यायाधीशों या सत्ता में बैठे लोगों . को भ्रष्ट करने के लिए करता है ताकि कानून की आड़ और संरक्षण के तहत भी कुछ भौतिक लाभ प्राप्त कर सके। अनुवादित शब्द श्अन्य लोगों की संपत्तिश का अर्थ श्सार्वजनिक संपत्तिश भी हो सकता हैष ;यूसुफ अली 1991ए पृष्ठ 76ए एफएन 201द्ध।

इन बयानों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लामी परंपरा में रिश्वतखोरी को एक पापपूर्ण प्रथा माना जाता है।

कुल मिलाकरए विभिन्न धर्मों के धर्मग्रंथों का नमूना खुलासा कर रहा है। अनैतिक और अनैतिक आचरण के रूप में रिश्वतखोरी की निंदा में काफी स्थिरता दिखाई देती है।

द्वितीयण धोखाधड़ी और धोखाधड़ी

फेरेल एट अलण ;2005ए पृष्ठ 33द्ध धोखाधड़ी को षकिसी भी उद्देश्यपूर्ण संचार के रूप में परिभाषित करता है जो गलत धारणा बनाने के लिए तथ्यों को धोखा देता हैए हेरफेर करता है या छुपाता हैष। बाज़ार केवल तभी कुशलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं जब धोखाधड़ी वाला व्यवहार न्यूनतम हो। कपटपूर्ण व्यावसायिक प्रथाएँ बाज़ार में उपभोक्ताओं के विश्वास को कमज़ोर करती हैंय विश्वास के बिनाए मुक्त बाज़ार कुशलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकते।

धोखाधड़ी . यहूदी दृष्टिकोण

यहूदी धर्म के लेखन में बाज़ार और अन्य क्षेत्रों में कपटपूर्ण व्यवहार की कई निंदाएँ शामिल हैं। यहां कुछ उदाहरण उद्धृत किये गये हैं। लैव्यव्यवस्था 19रू11 में यह कहा गया हैए श्तुम चोरी न करनाय न तो झूठ बोलनाए और न एक दूसरे से झूठ बोलना।श लैव्यव्यवस्था 19रू35.36 आगे आदेश देता है किए श्न्यायए तौलए तौलए माप में कुटिलता न करना। तुम्हारे पास उचित तराजूए उचित बटखरेए धर्मी एपा और धर्मी हीन होंय मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूंए जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाया। यह नीतिवचन 11रू1 में प्रतिध्वनित होता है जिसमें कहा गया है कि ष्झूठे तराजू से यहोवा को घृणा आती हैय परन्तु वह उचित बाट से प्रसन्न होता है।ष

भविष्यवक्ता आमोस उन लोगों पर प्रभु की निंदा का वादा करता है जो जरूरतमंदों को धोखा देते हैं जब वह कहते हैंरू

हे दरिद्रोंको निगलनेवालोंए और देश के कंगालोंको नाश करनेवालोंए यह कह कर सुनोए नया चांद कब बीतेगाए कि हम अन्न बेच सकेंद और विश्रामदिनए कि हम अन्न उपजाएंद एपा को छोटा और शेकेल को बड़ा करनाए और छल के पलड़ों को बिगाड़नाय कि हम कंगालों को रूपया देकरए और कंगालों को एक जोड़ी जूतियां देकर मोल लेंए और अन्न का कूड़ा बेच डालेंछ यहोवा ने याकूब के घमण्ड की शपथ खाई हैए मैं उनके किसी भी काम को कभी न भूलूंगा। क्या इस कारण देश कांप न उठेगाए और उसमें रहनेवाले सब लोग छाती पीटेंगेद हाँए यह नदी की तरह पूरी तरह से उठेगाय और वह मिस्र की नदी की नाईं फिर घबराकर डूब जाएगी। ;आमोस 8रू4.8द्ध

इसी प्रकारए भविष्यवक्ता यिर्मयाह प्रभु द्वारा धोखे और इसका अभ्यास करने वालों की निम्नलिखित निंदा करता हैरू

भला होता कि मैं जंगल में मुसाफिरों के रहने के स्थान में होताए कि अपने लोगों को छोड़कर उनके पास से चला जाता! क्योंकि वे सब व्यभिचारी और विश्वासघातियों का जमावड़ा हैं। और वे अपनी जीभ और धनुष को झूठ पर झुकाते हैंय और वे देश में बड़े हुएए परन्तु सच्चाई के लिये नहींय क्योंकि वे बुराई से बुराई की ओर बढ़ते जाते हैंए और मुझे नहीं पहचानतेए यहोवा की यही वाणी है। अपने अपने पड़ोसी का ध्यान रखनाए और किसी भाई पर भरोसा न करनाय क्योंकि हर एक भाई चतुराई से काम करता हैए और हर एक पड़ोसी बदनामी करता है। और वे एक दूसरे को धोखा देते हैंए और सच नहीं बोलतेय उन्होंने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया हैए वे अधर्म करने से थक गए हैं। तेरा निवास छल के बीच में हैय वे छल के कारण मुझे जानने से इन्कार करते हैंए यहोवा की यही वाणी है।

इस कारण सेनाओं का यहोवा यों कहता हैए देखए मैं उनको सूंघकर परखूंगाय अपनी प्रजा की बेटी के कारण मुझे और क्या करना चाहिएघ उनकी जीभ चोखा तीर हैए वह छल की बातें बोलता हैय कोई अपने पड़ोसी से मुंह से तो शांति से बातें करता हैए परन्तु मन में उसकी बाट जोहता रहता है। क्या मैं उन्हें इन बातों के लिये दण्ड न दूँघ यहोवा की यही वाणी हैय क्या मेरी आत्मा ऐसे राष्ट्र से पलटा न लेगीघ ;यिर्मयाह 9रू1.8द्ध

ऊपर उद्धृत धर्मग्रंथों को पढ़ने से एक स्पष्ट तस्वीर सामने आती है कि यहूदी धार्मिक परंपरा में धोखाधड़ी और धोखाधड़ी घृणित है। जो लोग ऐसी चीज़ों का अभ्यास करते हैं उन्हें प्रभु से दंड का वादा किया जाता है।

धोखाधड़ी . ईसाई परिप्रेक्ष्य

ईसाई परिप्रेक्ष्यए यहूदी पुराने नियम की नींव पर आधारित होने के कारणए उपरोक्त सभी उद्धरण शामिल हैं। नया नियम ईसाइयों की ओर से धोखे के खिलाफ चेतावनी देता है और धोखेबाजों से सावधान रहने की चेतावनी देता है। रोमियों 16रू17.18 चेतावनी देता हैए श्हे भाइयोंए अब मैं तुम से बिनती करता हूंए कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने सीखी हैए फूट डालते और अपराध करते हैंए उन पर ध्यान दोय और उनसे बचेंण क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहींए परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैंय और अच्छी बातों और निष्पक्ष भाषणों से सीधे.सादे लोगों के दिलों को धोखा देते हैं।श

इफिसियों 4रू48 में चोरी को स्पष्ट रूप से संबोधित किया गया हैए जो कहता हैए ष्चोरी करने वाला फिर चोरी न करेए परन्तु अपने हाथों से भलाई का काम करके परिश्रम करेए कि जिसे आवश्यकता हो उसे दे दे।ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि ईसाई धर्मग्रंथ धोखाधड़ीए धोखाधड़ी और चोरी की कड़ी निंदा करते हैं।

धोखाधड़ी . इस्लामी परिप्रेक्ष्य

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसारए ईमानदार व्यवहार पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। सरकार या प्राधिकरण पर यह सुनिश्चित करने का आरोप है कि व्यापारी अपने ग्राहकों को वज़न आदि में धोखा न दें। कुरान इस बात को स्पष्ट करने में सख्त है कि जो व्यापारी और व्यवसाय धोखाधड़ी में लिप्त हैंए वे ईश्वर की नज़र में पाप कर रहे हैं। अध्याय 83 ;धोखाधड़ी के सौदागरद्ध में निम्नलिखित श्लोक हैंरू

धिक्कार है उन पर जो कपट करते हैंए जो जब मनुष्यों से नाप तौलकर लेना चाहते हैं तो पूरा नाप लेते हैंए परन्तु जब नाप या तौल कर देना चाहते हैं तो उचित से कम देते हैंए क्या वे नहीं सोचते कि ऐसा करेंगे हिसाब मांगा जाएगाघ एक शक्तिशाली दिन परए एक ऐसा दिन जब सारी मानवजाति विश्व के प्रभु के सामने खड़ी होगीघ ;कुरान 83रू1.6द्ध

यूसुफ अली ;1991ए पृण 1616ए एफएनण 6011ए 6012द्ध के अनुसाररू

धोखाधड़ी को व्यापक रूप से सामान्य अर्थ में लिया जाना चाहिए। इसमें कम माप या कम वजन देना शामिल हैए लेकिन यह उससे कहीं अधिक शामिल हैण्ण् यह अन्याय की भावना है जिसकी निंदा की जाती है

दृ बहुत कम देना और बहुत अधिक माँगना। इसे वाणिज्यिक लेन.देन में दिखाया जा सकता हैए जहां एक व्यक्ति अपने पक्ष में एक उच्च मानक रखता हैए जितना वह उसके विरुद्ध स्वीकार करने को तैयार होता है।

यूसुफ अली जारी हैरू

धोखाधड़ी के विरुद्ध कानूनी और सामाजिक प्रतिबंध उनकी प्रभावशीलता पर निर्भर करते हैं कि पता चलने की संभावना है या नहीं। नैतिक और धार्मिक मान्यताएँ भिन्न प्रकार की होती हैं। क्या आप अपने स्वभाव को नीचा दिखाना चाहते हैंर्द भले ही दूसरे लोगों को आपकी ग़लती के बारे में कुछ पता हो या नहींए आप ईश्वर के सामने दोषी हैं।

कुरान यह भी सिखाता है कि हमेंए ष्सिर्फ माप और वजन देना हैए न ही लोगों से उनके हक की चीजें छीननी हैंण्ण्ण्ष् ;कुरान 11रू85द्ध और ष्ण्ण्ण्अपनी बातें सीधी रखेंण्ण्ण्ष् ;कुरान 33रू70द्ध द्धण् पैगंबर मुहम्मद को यह कहने का श्रेय दिया जाता हैए ष्जो धोखा देता है वह हम में से नहीं हैष् ;केलर 1994 जैसा कि राइस 1999 में उद्धृत किया गया हैद्ध। इस्लामी परंपरा में ईमानदारी को बढ़ावा देने वाला एक सकारात्मक कथन भी शामिल है। श्एक ईमानदार व्यापारी पैग़म्बरोंए सच्चे लोगों और शहीदों में से एक होगा

फैसले का दिन,श ख्तिर्मिज़ीरू अबू सईद ;आरएद्ध, ;सिद्दीकी 2004द्ध।

ये उद्धरण यह स्पष्ट करते हैं कि इस्लामी धर्मग्रंथों और शिक्षाओं में वाणिज्य और व्यापारिक लेन.देन में ईमानदार व्यवहार पर बहुत जोर दिया गया है। धोखाधड़ी और धोखाधड़ी की घोर निंदा की जाती है।

धोखाधड़ी और धोखाधड़ी से संबंधित विभिन्न धर्मग्रंथों की तुलना करने परए हम पाते हैं कि सभी इब्राहीम धर्मग्रंथ निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में ईमानदार व्यवहार के महत्व पर जोर देते हैं। बाज़ार विशेष रूप से भ्रामक प्रथाओं के प्रति संवेदनशील है जिसके तहत एक पक्ष दूसरे को गुमराह करता है ताकि दूसरे पक्ष के खर्च पर खुद को समृद्ध कर सके। फेरेल एट अलण ;2005ए पृण 33द्ध उस शोध को संदर्भित करता है जो दर्शाता है कि अमेरिकी संगठन इससे अधिक खोते हैं

धोखाधड़ी के कारण प्रति वर्ष +400 बिलियन। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में यहूदी.ईसाई नैतिकता की प्रबलता के बावजूद है। धर्मग्रंथ की शिक्षाओं में पुनश्चर्या अमेरिकी कंपनियों और उनके कर्मचारियों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

तृतीयण भेदभाव

फेरेल एट अलण ;2005ए पृण 36.37ए 230.231द्ध भेदभाव को एक चल रहे नैतिक मुद्दे के रूप में पहचानेंए खासकर जब दुनिया भर के विभिन्न देशों से निपटते समय जहां भेदभाव आम बात है। नस्लए नस्लए लिंग आदि के आधार पर भेदभाव को आम तौर पर सभी इब्राहीम धर्मों की शिक्षाओं में घृणित माना जाता है। कई लोग यह तर्क देंगे कि सभी प्रकार के भेदभाव की निंदा एक अपेक्षाकृत आधुनिक विकास है। हालाँकिए अब्राहमिक धर्मग्रंथ आम तौर पर लिंग और नस्लीय समानता और न्याय के समर्थन में सुसंगत हैं।

भेदभाव . यहूदी दृष्टिकोण

यहूदी धर्मग्रंथ विश्वासियों को विदेशियोंए विधवाओं और गरीबों के साथ सम्मान और सम्मान के साथ व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिएए यहूदी कानून की आवश्यकता है कि यहूदियों के बीच रहने वाले अजनबियोंए जो विदेशी हैंए के साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए। निर्गमन 23रू9 आज्ञा देता है किए श्ण्ण्ण्किसी परदेशी पर अन्धेर न करनाय क्योंकि मिस्र देश में तुम परदेशी थेए यह देखकर तुम परदेशी का मन जान लेते हो।श लैव्यव्यवस्था 19रू15 कहता हैए श्न्याय करते समय तुम कोई अधर्म न करनाय तू दरिद्र का आदर न करनाए और न वीर का पक्ष लेनाय परन्तु तू अपने पड़ोसी का न्याय धर्म से करना।श व्यवस्थाविवरण 24रू14 निर्देश देता है किए ष्किसी गरीब और दरिद्र मजदूर पर अन्धेर न करनाए चाहे वह तेरे भाइयों में से होए चाहे तेरे देश में तेरे फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो।ष् व्यवस्थाविवरण 24रू17 आगे कहता हैए श्परदेशी वा अनाथों का न्याय न बिगाड़नाय न ही विधवा का वस्त्र गिरवी रखना।श

केवल दुर्व्यवहार की निंदा करने के बजायए यहूदी धर्मग्रंथ बहुत कुछ प्रदान करते हैं

लैव्यव्यवस्था 19रू34 जैसे सकारात्मक नियम जो कहते हैंए श्जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिये अपने घर में जन्मे हुए जन के समान ठहरेगाए और तुम उस से अपने समान प्रेम रखनाय क्योंकि तुम मिस्र देश में परदेशी थेय मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।

यहूदी धर्मग्रंथ दिखाते हैं कि ईश्वर किस प्रकार भेदभाव रहित होने का उदाहरण प्रस्तुत करता हैरू

क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा देवताओं का परमेश्वरए और प्रभुओं का प्रभुए महान ईश्वरए पराक्रमी और भयानक हैए जो किसी का कुछ नहीं देखताए और न प्रतिफल लेता है। वह अनाथों और विधवाओं का न्याय करता हैए और परदेशियों को भोजन और वस्त्र देकर उस से प्रेम रखता है। इसलिये तुम परदेशी से प्रेम रखोय क्योंकि तुम मिस्र देश में परदेशी थे। ;व्यवस्थाविवरण 10रू17.19द्ध

इस प्रकार हम पाते हैं कि यहूदी धर्मग्रंथ आम तौर पर भेदभाव का समर्थन नहीं करते हैं। फ्रीडमैन ;2000ए पृ॰ 46द्ध तो यहाँ तक कहते हैं किरू

अजनबियों की देखभाल करने की इस अवधारणा का उल्लेख ख्यहूदी, धर्मग्रंथों में अंतहीन बार किया गया है ण्ण्ण क्योंकि जो लोग हैं उनका फायदा उठाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है

अलग.अलगए चाहे वे अलग.अलग राष्ट्रीयता के होंए अलग.अलग पृष्ठभूमि के होंए या अलग.अलग नस्ल के हों। नियोक्ताओं का विशेष दायित्व है कि वे अलग.अलग पृष्ठभूमि वाले लोगों को सार्थक काम प्रदान करके उन्हें श्मजबूतश करें।

भेदभाव . ईसाई परिप्रेक्ष्य

ईसाई परिप्रेक्ष्यए यहूदी पुराने नियम की नींव पर आधारित होने के कारणए उपरोक्त सभी उद्धरण शामिल हैं। सभी लोगों को महत्वपूर्ण माना जाता है और उनके साथ उचित व्यवहार किया जाना चाहिए। नया नियम वास्तविक या काल्पनिक धन के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव न करने की चेतावनी देता है। जेम्स निम्नलिखित बताते हैंरू

यदि तेरी सभा में एक पुरूष सोने की नथ और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए आएए और एक कंगाल भी घिनौना वस्त्र पहिने हुए आएय और तुम समलैंगिक वस्त्र पहनने वाले का आदर करनाए और उस से कहनाए यहां अच्छे स्थान में बैठय और कंगालों से कहोए वहीं खड़े रहोए या यहीं मेरे पांवों के तले बैठोय क्या तुम अपने आप में पक्षपात नहीं करतेए और बुरे विचारों के न्यायी नहीं बन जातेघ ३

यदि तुम पवित्र शास्त्र के अनुसार उस राजकीय व्यवस्था को पूरा करते होए कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखनाए तो अच्छा करते होय परन्तु यदि तुम मनुष्यों का आदर करते होए तो पाप करते होए और अपराधियों के समान व्यवस्था पर विश्वास करते हो। ;जेम्स 2रू2.4ए 8.9द्ध

कथित धार्मिकताए सत्यनिष्ठा या सम्मान में लोगों के भेदभाव का कोई आधार भी नहीं है। रोमियों 3रू10.12 कहता हैए ब्जैसा लिखा हैए कोई धर्मी नहींए कोई नहींय कोई समझनेवाला नहींए कोई परमेश्वर का खोजी नहीं। वे सब मार्ग से भटक गए हैंए वे सब मिल कर लाभहीन हो गए हैंय ऐसा कोई नहीं जो भलाई करता होए नहींए एक भी नहीं।श रोमियों 3रू23 आगे कहता हैए ब्क्योंकि सब ने पाप किया हैए और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं।ब

उपरोक्त कथन यह स्पष्ट करते हैं कि ईसाई धर्मग्रंथों के संदर्भ में भेदभाव को उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

भेदभाव . इस्लामी परिप्रेक्ष्य

भेदभाव पर इस्लामी ग्रंथ स्पष्ट हैं। निजी व्यवसाय और सार्वजनिक क्षेत्र में सभी प्रकार के भेदभाव को अन्यायपूर्ण माना जाता है और इसका विरोध किया जाता है। पैगंबर मोहम्मद के अनुसारए

किसी भी अरब को किसी गैर.अरब पर कोई श्रेष्ठता नहीं है और किसी भी गैर.अरब को किसी अरब पर कोई श्रेष्ठता नहीं हैय किसी काले व्यक्ति को गोरे व्यक्ति पर श्रेष्ठता नहीं है और किसी गोरे व्यक्ति को काले व्यक्ति पर श्रेष्ठता नहीं है। परमेश्वर की दृष्टि में सम्मान की कसौटी धार्मिकता और ईमानदार जीवन है। ;राइस 1999ए पृष्ठ 350द्ध

कानूनी मुद्दों परए कुरान बताता हैए

यदि तुम में से दो मनुष्य व्यभिचार के दोषी होंए तो उन दोनों को दण्ड दो। यदि वे पश्चाताप करते हैं और सुधार करते हैंए तो उन्हें अकेला छोड़ देंय क्योंकि ईश्वर बार.बार लौटने वाला और अत्यंत दयालु है। ;4रू16द्ध

लैंगिक समानता परए कुरान घोषणा करता हैए

हे मानवजाति! हमने तुम्हें नर और मादा के एक ;जोड़ेद्ध से पैदा कियाए और तुम्हें राष्ट्र और जनजातियाँ बना दियाए ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो३।श ;49रू13द्ध

इन संदर्भों के अलावाए कुरान में कई अन्य आयतें हैं जो समान व्यवहार और गैर.भेदभाव के सिद्धांत को कायम रखती हैं।

कुल मिलाकर धर्मग्रंथों के ये उद्धरण जानकारीपूर्ण हैं क्योंकि वे समान रूप से भेदभाव के खिलाफ बोलते हैं। व्यवहार में हम देखते हैं कि कई संस्कृतियों और समाजों में भेदभाव व्याप्त हैए कुछ को कथित तौर पर धर्मग्रंथों के आधार पर उचित ठहराया जाता है। हालाँकिए धर्मग्रंथों का संतुलित अध्ययन उस परिप्रेक्ष्य का प्रतिकार करेगा। फेरेल एट अलण ;2005ए पृण 231द्ध का तर्क है कि भेदभाव कम करने से व्यवसायों को कर्मचारी कारोबार कम करनेए नियुक्ति लागत कम करनेए उत्पादकता बढ़ानेए सद्भावना में सुधार करने और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

चतुर्थण कर्मचारी मुआवजा

कर्मचारी मुआवज़ा आज भी एक चिंता का विषय हैए जैसा कि पूरे इतिहास में रहा है। आज के मुद्दों में स्वेटशॉप में सस्ते श्रम का शोषण ;फेरेल एट अलण 2005ए पृष्ठ 17द्ध और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि श्रमिकों को वह सब मिले जो उन्हें मिलना चाहिएए जैसा कि रिपब्लिक विंडो और डोर्स फैक्ट्री बंद होने ;कैरोल 2008द्ध में हुआ था। प्राचीन धर्मग्रंथों को पढ़ने से पता चलता है कि वे भी कर्मचारियों के मुआवज़े को लेकर चिंतित थे।

कर्मचारी मुआवज़ा . यहूदी परिप्रेक्ष्य

कर्मचारियों पर विचार करते समयए यहूदी धर्मग्रंथों में वेतन के शीघ्र भुगतान की आवश्यकता होती है। लैव्यव्यवस्था 19रू13 कहता हैए ष्ण्ण्मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास रात भर बिहान तक न रहेगीष्। इसे व्यवस्थाविवरण में और भी अधिक स्पष्ट शब्दों में दोहराया गया है जहां यह कहा गया हैरू

किसी गरीब और दरिद्र मजदूर पर अन्धेर न करनाए चाहे वह तेरे भाइयों में से होए चाहे तेरे देश में तेरे फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो। उसी दिन तू उसे उसकी मजदूरी दे देनाए और सूर्य अस्त न होने पाएय क्योंकि वह कंगाल हैए और उस पर अपना मन लगाता हैय कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे विरूद्ध यहोवा की दोहाई देए और तेरे कारण पाप ठहरे। ;24रू14.15द्ध

इस प्रकारए वर्तमान परिच्छेदों में हम कर्मचारियों को यहूदी धर्मग्रंथ में उनके काम के लिए तुरंत भुगतान करने की आवश्यकता देखते हैं।

कर्मचारी मुआवज़ा . ईसाई परिप्रेक्ष्य

ईसाई परिप्रेक्ष्यए यहूदी पुराने नियम की नींव पर आधारित होने के कारणए उपरोक्त सभी उद्धरण शामिल हैं। याकूब 5रू4 में काम पर रखे गए लोगों को भुगतान न करने पर घृणा की गई हैए जहां यह कहा गया हैए ष्देखोए जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेतों की कटाई की हैए उनकी मजदूरी जो तुम में से धोखे से रोक ली गई हैए चिल्ला रहे होरू और वे चिल्ला रहे हैं जो कुछ काटा गया हैए वह शबूओत के यहोवा के कानों में डाला गया है।श

कर्मचारी मुआवज़ा . इस्लामी परिप्रेक्ष्य

इस्लामी शिक्षाएं किसी श्रमिक को समय पर उचित वेतन देने के महत्व पर जोर देती हैं। पैगंबर की निम्नलिखित बातें बुखारी की हदीस से आती हैंरू

तुम्हारे बन्दे तुम्हारे भाई हैं जिन पर अल्लाह ने तुम्हें अधिकार दिया है। इसलिएए यदि किसी के भाई उसके वश में हैंए तो उसे चाहिए कि वह उन्हें वैसा ही खिलाए जैसा वह खाता है और जैसा वह पहनता है वैसा ही उन्हें पहनाए। आपको उन पर उस चीज़ का बोझ नहीं डालना चाहिए जिसे वे सहन नहीं कर सकते हैंए और यदि आप ऐसा करते हैंए तो उनकी ;उनके कठिन काम मेंद्ध मदद करें। ;खंड 3ए पुस्तक 46ए क्रमांक 721द्ध

अल्लाह फ़रमाता हैए श्मैं क़ियामत के दिन तीन लोगों के ख़िलाफ़ होऊंगारू ण्ण्ण्और वह जो एक मजदूर को काम पर रखता है और उससे पूरा काम करवाता हैए लेकिन उसे उसकी मज़दूरी नहीं देता है।श ;खंड 3ए पुस्तक 34ए संण्द्ध 430द्ध

पैगंबर की ये चेतावनी यह विशेष रूप से स्पष्ट करती है कि श्रमिकों को उनके नियोक्ता के सापेक्ष उचित वेतन दिया जाना चाहिए। इस प्रकार हम तीनों इब्राहीम धर्मों में श्रमिकों को उचित भुगतान करने का आदेश देखते हैं।

निष्कर्ष

इस पेपर में चर्चा व्यापक होने के लिए नहीं हैए बल्कि केवल इस धारणा को दूर करने के लिए है कि व्यावसायिक नैतिकता सिखाने में धार्मिक ग्रंथ चर्चा का एक महत्वपूर्ण स्रोत नहीं हो सकते हैं। यहूदीए ईसाई और इस्लामी धर्मग्रंथों से यहां प्रस्तुत उद्धरणों का नमूना उन सामग्रियों की व्यापकता को दर्शाता है जो धर्मग्रंथों में पाई जा सकती हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक नैतिकता की आधुनिक शिक्षाओं की नींव से संबंधित हैं। वास्तव मेंए संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यावसायिक नैतिकता के क्षेत्र के अधिकांश प्रारंभिक विकास का पता धार्मिक संस्थानों से लगाया जा सकता है। हाल के वर्षों में ही व्यावसायिक नैतिकता की चर्चा से धर्म गायब हो गया है ;फेरेल एट अलण् 2005ए पृण् 9.12द्ध।

यहूदी धर्मए ईसाई धर्म और इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं को पढ़ना और तुलना करना अभी भी व्यावसायिक नैतिकता के शिक्षकों और छात्रों के लिए शिक्षाप्रद है। हम प्रस्तुत करते हैं कि इन पाठों को व्यावसायिक नैतिकता सिखाने में हमारे प्रयासों का एक महत्वपूर्ण दार्शनिक आधार बनना चाहिएए क्योंकि सभी संकेत यह हैं कि अधिकांश छात्र पहले से ही इन शिक्षाओं से अपने अधिकांश नैतिकता प्राप्त करने वाले विश्वास या धर्म में शामिल हो चुके हैं। यहां तक कि वे छात्र जो किसी धर्म से जुड़े या प्रभावित नहीं हैंए उनके पास आमतौर पर एक दर्शन होता है जो अब्राहमिक विश्वासों की कई नैतिक और नैतिक परंपराओं को शामिल करता है। इस वैश्विक और विविध समाज में व्यवसायों के लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि इन धार्मिक शिक्षाओं में कितना ओवरलैप मौजूद है। यह ओवरलैपए कई देशों में सामान्य व्यावसायिक नैतिकता का निर्माण वैश्विक स्तर पर व्यवसाय संचालन को सक्षम करने वाले के रूप में काम करना चाहिए।

हालाँकिए हम भोले नहीं हैं और मीडिया को पढ़ने से यह एहसास होता है कि इनमें से प्रत्येक धर्म में विश्वास रखने वाले व्यक्ति उन बाधाओं की उपेक्षा करते हैं जो वे लगाते हैं। ;नोटरू एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में कोई भी मीडिया से लेखों को कक्षा में शामिल कर सकता है जैसा कि वेक्सी और बायर्न्स द्वारा अभ्यास किया जाता है ख्पीबीएसए 2008,द्ध। परिणामस्वरूपए विश्वासए जो नैतिक मूल्यों में समानता की एक स्वाभाविक कलाकृति के रूप में आना चाहिएए नष्ट हो गया है और व्यापार के संचालन में संघर्ष शुरू हो गया है क्योंकि पार्टियां अपनी स्थिति की रक्षा करना या बढ़ाना चाहती हैं। यदि विश्वास बना रहताए तो नैतिक और नैतिक मानकों के बीच समानता से व्यावसायिक संस्थाओं के बीच अधिकांश संघर्षों को रोका जाना चाहिए था।

इस अध्ययन में हमने तीन प्रमुख इब्राहीम धर्मों के धर्मग्रंथों में व्यावसायिक नैतिकता शिक्षण की समानता पर ध्यान केंद्रित किया है। दरअसलए इन धर्मों के बीच व्यावसायिक नैतिकता में आम मान्यताओं को एक इंटरफेथ घोषणारू ईसाइयोंए मुसलमानों और यहूदियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर एक आचार संहिता ;1993द्ध में मान्यता दी गई थी। हालाँकिए वह दस्तावेज़ किसी भी धर्म के अनुयायियों को उनके नैतिक पदों के समर्थन में उद्धृत करने के लिए कोई धर्मग्रंथ संदर्भ प्रदान नहीं करता है।

संदर्भ

एएसीएसबी इंटरनेशनल। 2008ण व्यवसाय मान्यता के लिए पात्रता प्रक्रियाएँ और मान्यता मानक। 25 अप्रैल 2003 को अपनाया गयाए 31 जनवरी 2008 को संशोधित किया गया। यहां उपलब्ध हैरू http:// aacsb.edu/accreditation/process/documents/AACSB_STANDARDS_Revised_Jan08.pdf (20 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

एएसीएसबी इंटरनेशनल। 2008बीण नैतिकता शिक्षा संसाधन केंद्र पठन सूचियाँ। यहां उपलब्ध है: http://aacsb.edu/resource_centers/EthicsEdu/reading-lists.asp (19 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गयाद्ध।

अबूदाऊदण सुनन अबूदाऊद का आंशिक अनुवाद। ट्रांसण अहमद हसनण यहां उपलब्ध है: http://www.usc.edu/schools/college/crcc/engagement/resources/texts/muslim/ Hadith/abudawud/ (25 सितंबर 2009 को एक्सेस किया गया)।

।कीमतमदजेण्बवउण 2008ण दुनिया के प्रमुख धर्मों को अनुयायियों की संख्या के आधार पर क्रमबद्ध किया गया। यहां उपलब्ध है: http://adherents.com/Religions_By_Adherents.html (21 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

अल.फ़ौज़ानए एसण्एसण 2003। इस्लाम में निषिद्ध व्यापारिक लेनदेन। लिखित व्याख्यानए अबू मरियम इस्माईल अलारकोन द्वारा अनुवादितए अल.इबाना ई.बुक्स। यहां उपलब्ध है: http://al- ibaanah.com/cms/pdf_files/12.pdf (19 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

अलीए एण्वाईण 1989ण पवित्र कुरान का अर्थए संशोधित अनुवाद और टिप्पणी के साथ नया संस्करण। बेल्ट्सविलेए एमडीरू अमाना प्रकाशन।

बैंडसुचए एमण्आरण और कैवनघए जीण्एफण 2005ण कार्यस्थल में आध्यात्मिकता को एकीकृत करनारू सिद्धांत और व्यवहार। जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंटए स्पिरिचुअलिटी एंड रिलिजनए 2 ;2द्धए 221.254।

बेग्सए जेण्एमण और डीनए केण्एलण 2007ण विधायी नैतिकता या नैतिक शिक्षाछरू एनरॉन के बाद के युग में संकाय के विचार। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 71 (1), 15-37।

बीडए सीण और बीडए सीण 2005। समसामयिक आर्थिक मुद्दों पर यहूदी.ईसाई सिद्धांतों को लागू करना। जर्नल ऑफ़ मार्केट्स एंड मोरैलिटीए 8 ;1द्धए 53.79। यहां उपलब्ध है: http://www.acton. org/files/8145677.pdf (19 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

बाइबल। 1990ण किंग जेम्स संस्करण। नैशविलेए टीएनरू थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स।

बुखारीण यहां उपलब्ध है: http://www.usc.edu/schools/college/crcc/engagement/resources/ texts/muslim/hadith/buhari/ (19 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

कैरोलए जेण 2008ण खिड़कियाँ और दरवाजे। इंटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यूनए 16 दिसंबर यहां उपलब्ध है: http://www.iht.com/articles/2008/12/16/opinion/edcarroll.php (21 दिसंबर 2008 को एक्सेस किया गया)।

कार्वरए आरण्एचण 2004। यदि नदी रुक गईरू आकार घटाने पर एक तल्मूडिक परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 50 (2), 137-147।

एपस्टीनए ईण्एमण 2002। धर्म और व्यवसाय . प्रबंधन शिक्षा में धार्मिक परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 38 (1-2), 91-96।